भारतीय शिक्षाशास्त्र के शिल्पकार

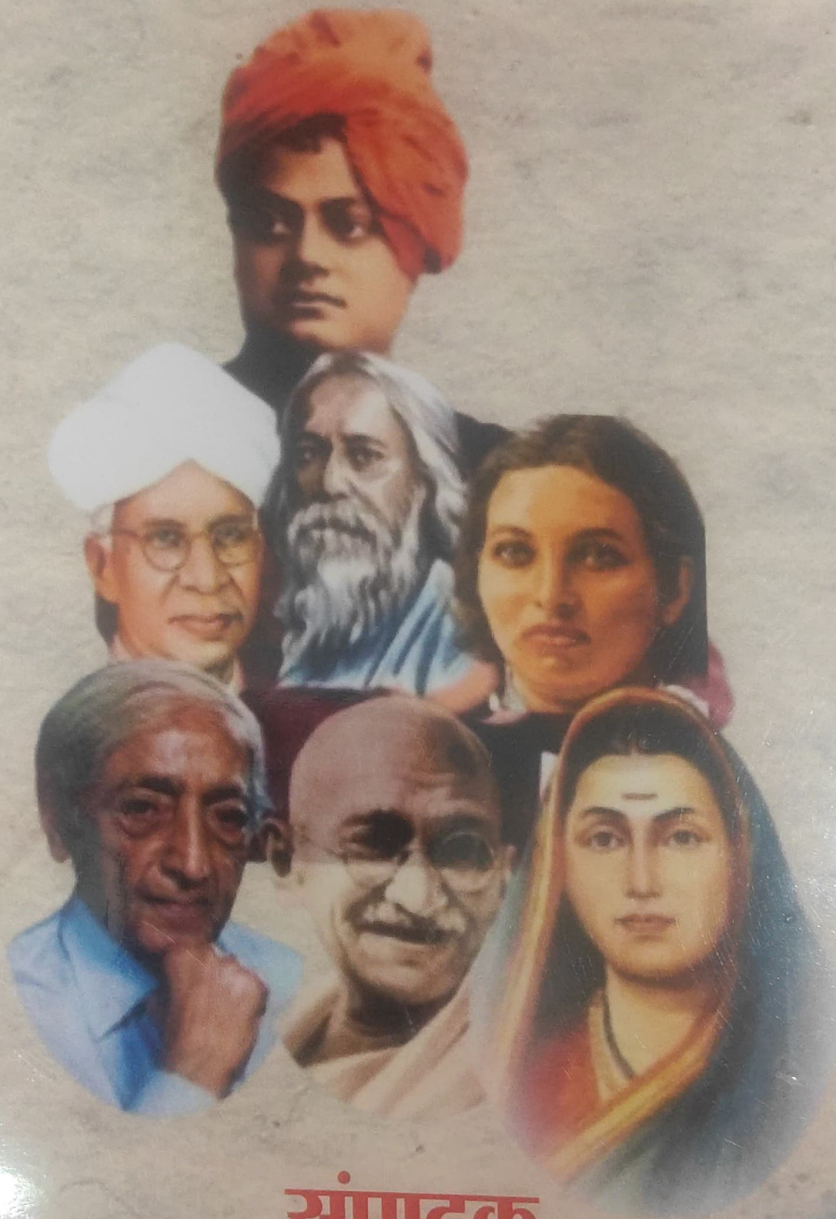

संपादक

डॉ. राहुल कुमार
डॉ. नीता वर्मा
डॉ. दीपेश लाल
राजेश कुमार
अभिषेक दीक्षित

भारतीय शिक्षाशास्त्र के शिल्पकार

संपादकगण

डॉ. राहुल कुमार
डॉ. नीता वर्मा
डॉ. दीपेश लाल
राजेश कुमार
अभिषेक दीक्षित

प्रकाशक

ग्रन्थ पब्लिकेशन्स

कानपुर नगर-21

DOI- 10.5281/zenodo.17168461

This is an open-access book section/chapter distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International, which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

भारतीय शिक्षाशास्त्र के शिल्पकार

प्रकाशक : ग्रन्थ पब्लिकेशन्स

5A-169 आवास विकास, हंसपुरम,
नौबस्ता, कानपुर नगर-208021
मो0 नं0-9335581636/8853330055
Email- granthpublications@gmail.com
Website- www.granthpublications.in

संपादक : डॉ. राहुल कुमार ©
डॉ. नीता वर्मा
डॉ. दीपेश लाल
राजेश कुमार
अभिषेक दीक्षित

संस्करण : प्रथम-सितम्बर, 2025

मुद्रक : ग्रन्थ पब्लिकेशन्स

5A-169 आवास विकास, हंसपुरम,
नौबस्ता, कानपुर नगर-208021

आवरण पृष्ठ : इन्टरनेट

मूल्य : ₹350/-

ISBN : 978-81-980702-3-4

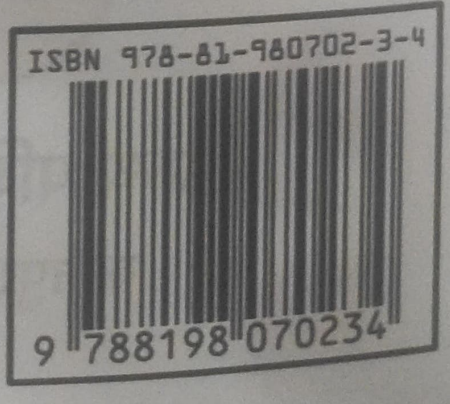

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक	पृ. सं.
1.	राजा राम मोहन राय के शैक्षिक विचार, योगदान व वर्तमान प्रासंगिकता	गुँजन	9
2.	स्वामी दयानंद सरस्वती के शैक्षिक विचार, योगदान व वर्तमान प्रासंगिकता	डॉ. स्नेहा राय प्रियदर्शनी	14
3.	ज्योतिबा फुले के शैक्षिक विचार, योगदान व वर्तमान प्रासंगिकता	वसीम अख्तर	20
4.	सावित्रीबाई फुले के शैक्षिक विचार, योगदान व वर्तमान प्रासंगिकता	डॉ.दीपेश लाल	25
5.	पंडिता रमाबाई के शैक्षिक विचार, योगदान व वर्तमान प्रासंगिकता	वंदना मिश्रा एवं डॉ. प्रसमिता मोहंती	30
6.	रवीन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचार, योगदान व वर्तमान प्रासंगिकता	डॉ. इंदु दहिया	38
7.	पं. मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक विचार, योगदान व वर्तमान प्रासंगिकता	डॉ. अखिलेश तिवारी	45
8.	स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचार, योगदान व वर्तमान प्रासंगिकता	डॉ. दीपा दास	52
9.	महात्मा गांधी के शैक्षिक विचार, योगदान व वर्तमान प्रासंगिकता	डॉ० अनु मिश्रा	62
10.	महर्षि अरविन्द घोष के शैक्षिक विचार, योगदान व वर्तमान प्रासंगिकता	संदीप सिंह	69
11.	गिजुभाई बधेका के शैक्षिक विचार, योगदान व वर्तमान प्रासंगिकता	नेहा चौधरी एवं मनीष कुमार	75
12.	डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शैक्षिक विचार, योगदान व वर्तमान प्रासंगिकता	डॉ. भुपेन्द्र कौर	81
13.	मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के शैक्षिक विचार, योगदान व वर्तमान प्रासंगिकता	रोमा टंडन	88
14.	डॉ. भीमराव अंबेडकर के शैक्षिक विचार, योगदान व वर्तमान प्रासंगिकता	अरविन्द कुमार यादव	93

15.	आचार्य विनोबा भावे के शैक्षिक विचार, योगदान व वर्तमान प्रासंगिकता	स्वाति गुप्ता	102
16.	जे. कृष्णमूर्ति के शैक्षिक विचार, योगदान व वर्तमान प्रासंगिकता	वैष्णवी	108
17.	डॉ. ज़ाकिर हुसैन के शैक्षिक विचार, योगदान व वर्तमान प्रासंगिकता	पाँखुरी गुप्ता	113
18.	डॉ. हंसा मेहता के शैक्षिक विचार, योगदान व वर्तमान प्रासंगिकता	आदित्य कुमार मिश्रा	119
19.	दीनदयाल उपाध्याय के शैक्षिक विचार, योगदान व वर्तमान प्रासंगिकता	मयंक ठाकुर एवं आशा साहू	124
20.	डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचार, योगदान व वर्तमान प्रासंगिकता	डॉ. रश्मि शुक्ला	128

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शैक्षिक विचार, योगदान व वर्तमान प्रासंगिकता

डॉ. भुपेन्द्र कौर
सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग, स्कूल ऑफ़ एजूकेशन एण्ड ह्यूमैनिटीज
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत
Email:- srsingh2472@gmail.com

सारांश:-

सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन् उन समकालीन भारतीय शिक्षा-दार्शनिकों में से हैं जिन्होंने शिक्षक के रूप में और शिक्षा-संस्थाओं में विभिन्न पदों पर लम्बे समय तक कार्य करके शिक्षा की समस्याओं को निकट से देखा और समझा है। विभिन्न भारतीय और पाश्चात्य विश्वविद्यालयों में अनेक विषयों के प्राध्यापक के रूप में और अनेक विश्वविद्यालय के उपकुलपति की हैसियत से डॉ. राधाकृष्णन् ने शिक्षा की प्रक्रिया, लक्ष्य तथा विभिन्न पहलुओं का गम्भीर अध्ययन किया है। विश्वविद्यालय आयोग के प्रधान के रूप में उन्होंने विश्वविद्यालय-शिक्षा के विभिन्न पहलुओं की जाँच-पडताल की है। शिक्षा-संस्थाओं के इस व्यक्तिगत अनुभव के अतिरिक्त डॉ. राधाकृष्णन् ने विश्व के सभी महान् दर्शनों का गहरा अध्ययन किया है। प्रस्तुत अध्ययन में सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन् के जीवन परिचय, उनके शैक्षिक विचारों, शैक्षिक योगदान तथा वर्तमान समय में उनके शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता का विस्तृत विवेचन किया गया है।

प्रमुख शब्द:- *शिक्षा दर्शन, चरित्र निर्माण, मानवतावाद, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020।*

"नयी पीढी को पवित्रता और आध्यात्मिक जीवन की सर्वोच्चता, भ्रातृत्व और शान्ति के प्रति प्रेम में प्रशिक्षित किया जाना आवश्यक है"

-डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

जीवन परिचय:-

भारतीय दार्शनिक एवं शिक्षाशास्त्री तथा स्वतन्त्र भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् से भारत का प्रत्येक शिक्षक और शिक्षार्थी परिचित है। उनका जन्म 5, सितम्बर, सन् 1888 में मद्रास में हुआ। उन्होंने मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज में शिक्षा प्राप्त की और मद्रास के प्रजीडेन्सी कॉलेज में दर्शन के प्राध्यापक नियुक्त हुए। इसके बाद वे मैसूर विश्वविद्यालय में दर्शन के प्राध्यापक रहे। ऑक्सफ़ोर्ड के मैनचेसटर कॉलेज में वे तुलनात्मक धर्म के उपटन प्राध्यापक रहे। सन् 1929-30 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के उपकुलपति रहे। वे ऑक्सफ़ोर्ड में पूर्वीय धर्मो और नीतिशास्त्र के स्पाल्डिग प्रोफेसर नियुक्त हुए। सन् 1921 से 39 तक ये कलकत्ता विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर रहे। सन् 1931 से 39 तक बौद्धिक सहयोग पर अन्तर्राष्ट्रीय समिति के सदस्य रहे। सन् 1946, 1947, 1984, 1949 और 1950 में ये राष्ट्र संगठन की युनेस्को समिति में भारतीय प्रतिनिधि मण्डल के नेता रहे। सन् 1952 में ये इस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के सभापति चुने गये। सन् 1948 में ये इसकी प्रबन्ध समिति के प्रधान रहे।

सन् 1948 में ही ये भारत सरकार के विश्वविद्यालय आयोग के प्रधान रहे। सन् 1949 से 1952 तक ये सोवियत रूस में भारत के राष्ट्रदूत रहे। सन् 1953 में ये दिल्ली विश्वविद्यालय के चांसलर थे। सन् 1952 में ये अन्तर्राष्ट्रीय पी. ई. एन. के प्रधान और भारत में इस संस्था के प्रधान रहे। सन् 1952 में ही ये भारतीय गणतन्त्र के उपराष्ट्रपति चुने गये। सन् 1957 में ये फिर से उपराष्ट्रपति चुने गये। इन्होंने 1956 में जून और जुलाई मास में बेल्जियम, पोलैण्ड, ज्यूकोस्लोवाकिया, सोवियत संघ, हंगरी, बल्गारिया इत्यादि यूरापीय देशों और पूर्वीय और मध्य अफ्रीका के देशों की यात्रा की। 18 जून, 1956 को इन्हें मास्को विश्वविद्यालय का सम्मानित प्रोफेसर पद दिया गया। सितम्बर, अक्टूबर, 1956 में उन्होंने सिंगापुर इण्डोनेशिया, जापान और चीन की मैत्री यात्रा की। सितम्बर, 1957 में ये तीन सप्ताह के लिए होनोलुलु में पूर्व और पश्चिम के दार्शनिकों के सम्मेलन में भाग लिया तथा अमेरिका की यात्रा की। इसी समय उन्होंने जर्मनी में पी. ई. एन कांग्रेस के विचार-विमर्श में भाग लिया। जनवरी-फरवरी, 1960 में उन्होंने इंग्लैण्ड और स्कैण्डीनेविया की मैत्रीपूर्ण यात्रा की। नवम्बर, 1960 में ये पेरिस के यूनेस्कों सम्मेलन में सम्मिलित हुए। 1962 से 1967 तक देश के राष्ट्रपति के रूप में कार्य किया। इसके बाद में ये ब्रिटिश एकेडेमी के सम्मानित फैलो चुने गये।

सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन् को देश-विदेश में अनेक डिग्रियों और उपाधियों से विभूषित किया गया है। भारतीय विश्वविद्यालयों से इन्हें एम. ए. डी. लिट. की उपाधियों से विभूषित किया गया। इसके अतिरिक्त उन्होंने पाश्चात्य विश्वविद्यालय से एफ. आर. एस. एल., एल. एल. डी., डी. सी. एल., एफ. बी. ए. आदि डिग्रियाँ प्राप्त कीं। सन् 1931 में अंग्रेज सरकार ने उन्हें नाईट की उपाधि दी थी। सन् 1954 में भारत सरकार ने उन्हें भारत रत्न की उपाधि से विभूषित किया। इसके अतिरिक्त उन्हें जर्मन, मंगोलिया आदि विदेशों से भी अनेक उपाधियाँ प्राप्त हुईं। 1967 में वें मद्रास चले गये और वहाँ उन्होंने शान्त जीवन व्यतीत किया। 17 अप्रैल, 1975 को उन्होंने इस संसार को त्याग दिया। लेकिन उनकी स्मृतियाँ उनके कार्यो, विशेष कर शिक्षा के क्षेत्र के माध्यम से आज भी जीवित है। एक शिक्षक के मूल्य और आदर्श तथा शिक्षा की क्षमता में विश्वास को ध्यान में रखते हुए, उनके जन्मदिवस 5 सितम्बर को भारत में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

राधाकृष्णन् जी का शिक्षा-दर्शनः-

राधाकृष्णन् के शिक्षा-दर्शन के पीछे दी हुई संक्षिप्त रूपरेखा से उसमें कुछ विशेष लक्षण स्पष्ट होते है। ये विशेष लक्षण या विशेषताएँ निम्नलिखित है-

- **सर्वांग दृष्टिकोणः-** जैसा कि बतलाया जाता है कि दर्शन, ज्ञानशास्त्र, शिक्षा का लक्ष्य, पाठ्यक्रम आदि विभिन्न क्षेत्रों में राधाकृष्णन् ने सर्वागीण दृष्टिकोण अपनाया है। इससे वे एकांगिता के दोष से बचे रहे हैं।

- **मानव-प्रकृति की सर्वांग धारणाः-** सच्चा शिक्षा-दर्शन मानव-प्रकृति की सही धारणा पर आधारित होता है। राधाकृष्णन् के शिक्षा-दर्शन को यह ठोस आधार उपलब्ध है। उन्होंने मानव-प्रकृति के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है और एक सर्वाग चित्र उपस्थित करने का प्रयास किया है। वे मनुष्य के आध्यात्मिक पहलू पर जोर देते हुए भी उसके शारीरिक और मानसिक पहलू की अवहेलना नहीं करते। उन्होंने जो आदर्श मानव का चित्र खीचा है वह सर्वागीण आध्यात्मिक मानव है।

- **चरित्र की शिक्षाः-**राधाकृष्णन् ने इस बात पर जोर दिया है कि सच्ची शिक्षा चरित्र की शिक्षा है। इससे उनकी शिक्षा व्यावहारिक बन'सकती है और उसमें देश कर आवश्यकताओं को पूर्ण करने की

सामर्थ्य आ जाती है। राधाकृष्णन् जनतन्त्र के प्रबल समर्थक है और वे भारत को जनतन्त्र के रूप में फलता-फूलता देखना चाहते है। इसलिए उन्होंने शिक्षार्थियों में ऐसे चरित्र के विकास पर जोर दिया है, जिससे उनमें जनतन्त्रीय गुण उत्पन्न हों और वे देश के विकास में योगदान दे सकें।

- **समन्वयवादी दृष्टिकोण:-** शिक्षा के पाठ्यक्रम में राधाकृष्णन् ने समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाया है। वे दर्शन, विज्ञान, धर्म सभी की शिक्षा का महत्व दिखलाते है। उन्होंने एक ओर वैज्ञानिक और तकनीकी शिक्षा और दूसरी ओर मानविकी शिक्षा पर जोर दिया है। शिक्षा का लक्ष्य आत्मा-साक्षात्कार तभी पूरा हो सकता है जबकि शिक्षार्थी का सर्वांगीण विकास किया जाए।

- **मानववाद:-** राधाकृष्णन् मानववाद के समर्थक हैं। वे व्यक्ति की स्वतन्त्रता को सबसे अधिक मूल्यवान मानते है और उसमें समाज अथवा राज्य का हस्तक्षेप तक उचित नहीं समझते। " राधाकृष्णन् के अनुसार समाज की रचना ऐसी होनी चाहिए जो व्यक्ति के विकास में कम-से-कम बाधक हो। मूलरूप से व्यक्ति और समाज का कोई विरोध नहीं है, किन्तु यदि प्रश्न व्यक्ति और समाज की तुलना का है तो व्यक्ति पहले आता है क्योंकि, "प्रत्येक व्यक्ति एक संस्था का अवयव है जहाँ वह सब कार्य के साथ मिलकर कार्य करता है, परन्तु वह व्यक्ति भी है और उसकी अपनी भावनाएँ तथा इन्द्रियाँ, इच्छाएँ तथा प्रेम, आदर्श एवं कौतुक हैं" इसलिए राधाकृष्णन् शिक्षा व्यवस्था में प्रत्येक शिक्षार्थी की व्यक्तिगत विभिन्नताओं के अनुसार उसकी ओर विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक मानते हैं।

- **विश्वबन्धुत्व का आदर्श:-** अन्त में रवीन्द्रनाथ के सामान राधाकृष्णन् की शिक्षा व्यवस्था का परम लक्ष्य विश्व-बोध के लिए शिक्षा है। वह शान्ति के लिए शिक्षा है। शिक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिए कि उससे ऐसी नयी पीढी का निर्माण हो जो जाति, क्षेत्र, सम्प्रदाय अथवा राष्ट्र के परस्पर 'भेदभाव को भूल कर समस्त संसार को अपना परिवार माने। सच्ची शिक्षा अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा है।

शैक्षिक विचार:-

डॉ. राधाकष्णन् ने शिक्षा को जीवन के लिए आवश्यक माना है। परन्तु उन्होंने जीवन के आध्यात्मिक पक्ष के विकास के लिए अधिक महत्व दिया है। वे शिक्षा को ज्ञान तथा कौशल के विकास के लिए ही आवश्यक नहीं मानते वरन् उन्होंने शिक्षा को जीवनयापन की कला में दीक्षित करने के लिए भी अनिवार्य माना है। उनके अनुसार, हम शिक्षक से सीखते हैं, स्वयं सीखते है तथा जीवन एवं उसके अनुभवों से भी सीखते हैं। शिक्षा वस्तुतः एक औपचारिक अवधारणा या प्रत्यय नहीं है वरन् "सम्पूर्ण जीवन अनुभव है। इस कारण वह शिक्षा है।" इस प्रकार डॉ. राधाकृष्णन् जीवन को शिक्षा के रूप में देखते हैं।

डॉ. राधाकृष्णन् के अनुसार शिक्षा को मानव तथा समाज दोनों का निर्माण करना चाहिए। उन्होंने शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य पूर्ण मानव का निर्माण करना माना है। वे पूर्ण मानव के निर्माण में सौन्दर्यात्मक तथा आध्यात्मिक उत्कर्ष, जिज्ञासु मस्तिष्क, अंतर्ज्ञानी हृदय, चेतनशील आत्म तथा छानबीन करने वाले विवके के विकास पर बल देते है। इस प्रकार उनके अनुसार शिक्षा के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

- **ज्ञान प्राप्त करना:-** शिक्षा का सबसे प्रमुख उद्देश्य मनुष्य को ज्ञान देना है, उसको विद्वान बनाना है। ज्ञान के बगैर आध्यात्मिक विकास नहीं हो सकता इसी ज्ञान के लिए विज्ञान, साहित्य, कला और दर्शन आदि की शिक्षा दी जाती है।

- **रूपान्तरण:-** कोरा ज्ञान कुछ नहीं है, जब तक कि उसको आत्मासात न कर लिया जाए। इससे मनुष्य का रूपान्तरण होता है। यह केवल पुस्तकीय ज्ञान से सम्भव नहीं है। राधाकृष्णन् के शब्दों में, "पुस्तकों से शिक्षा ग्रहण की जा सकती है, परन्तु इस प्रकार से प्राप्त किया ज्ञान आत्मा की गहराई में नहीं उतरता, वह मानव की प्रकृति का अंग नहीं बनता। उसके द्वारा रूपान्तरण नहीं होता। रूपान्तरण के लिए आवश्यक है कि कुछ क्षणों के लिए पूर्णतया शान्त होकर बैठा जाए और यह देखा जाए कि विद्या तुमने ग्रहण की है, जो ज्ञान तुमने प्राप्त किया है, उसका रूपान्तरण हो।"

- **स्वतन्त्रता:-** शिक्षा का लक्ष्य मानव आत्मा की स्वतन्त्रता है। राधाकृष्णन् मानववादी (Humanist) है। मानव-आत्मा की स्वतन्त्रता सबसें अधिक मूल्यवान है, "यह आवश्यक है कि मानव-आत्मा की स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखें जिसके बहुत-से लाभ है, जिनसे संस्कृति की वृद्धि हुई है हमने आरम्भ से ही कहा कि मानव-आत्मा की स्वतन्त्रता से अधिक बडा कुछ नहीं है और मानव-आत्मा की प्राप्ति से अधिक कुछ नहीं है।"

- **चरित्र-निर्माण:-** किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके नर-नारियों के चरित्र पर निर्भर है। चरित्र-निर्माण के कार्य-शिक्षा के द्वारा होता है। चरित्र से तात्पर्य नैतिक चरित्र है, इसके बगैर व्यक्ति अथवा समाज किसी की प्रगति नहीं हो सकती।

- **आत्माभिव्यक्ति की कला का विकास:-** शिक्षा से मनुष्य आत्माभिव्यक्ति की कला सीखता है। भाषा इसी का एक रूप है। भाषा पर अधिकार कारने से व्यक्ति अपने विचारों को स्पष्ट कर सकता है। विभिन्न विषयों की शिक्षा देने में आत्म-प्रकाशन की कला के विकास पर विशेष रूप से दृष्टि रखी जानी चाहिए। आत्मा-प्रकाशन के लिए अन्तर्दृष्टि का विकास आवश्यक है।

- **अन्तर्दृष्टि का विकास:-** अन्त में अन्तर्दृष्टि के विकास के बिना कोई भी शिक्षा अधूरी है। प्राचीन उपनिषदों में अन्तर्दृष्टि को उच्चतम शिक्षा कहा गया है। उससे सत् और असत्, उचित और अनुचित का अन्तर किया जा सकता है। उसी से अपने को और जगत् का समझा जाता सकता है। उसी के ब्रह्म को प्राप्त किया जा सकता है। यह अन्तर्दृष्टि केवल पुस्तकों को पढने से नहीं मिल सकती। इसके लिए योग्य शिक्षक के नेतृत्व की आवश्यकता है। इसलिए राधाकृष्णन् ने विद्यालयों में योग्य शिक्षकों की नियुक्ति पर सबसे अधिक जोर दिया है।

शैक्षिक योगदान:-

डॉ.राधाकृष्णन् मानवतावादी विचारक तथा प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रतिपादक थे। डॉ. राधाकृष्णन्, "जिस व्यक्ति की आत्मा से दूसरी आत्मा में शक्ति का संचार होता है, वह गुरू कहलाता है और जिसकी आत्मा में यह शक्ति संचारित होती है, उसे शिक्षा कहते हैं।" उन्होंने समाज में शिक्षक के स्थान को बहुत महत्वपूर्ण माना है। उनके अनुसार शिक्षक ही बौद्धिक परम्पराओं तथा प्राविधिक कौशलों को एक सन्तति से दूसरी सन्तति को हस्तान्तरित करता है। वही सभ्यता के दीप को प्रज्वलित रखता है। आधुनिक युग में शिक्षण-व्यवसाय को ब्राह्य रूप से भले ही अच्छा कहा जाता है। परन्तु समाज में उसका कोई स्थान नहीं है। आज के समाज में डाक्टर, इंजीनियर, प्रशासक आदि को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। शिक्षको को मात्र बौद्धिकता के प्रतीक के रूप में स्वीकारा जाता है। आज का भारतीय समाज शिक्षक को उपेक्षा की दृष्टि से देखता है। शिक्षकों का कर्तव्य है कि वे नव-लोकतन्त्र के लिए उत्तम नागरिकों का

निर्माण करें। वे छात्रों में नवीन अनुभव के लिए जोश तथा ज्ञान में अदभुत कार्य के लिए प्रेम उत्पन्न करें। साथ ही वे अपने देश की सभ्यता को सजीव बनायें।

डॉ. राधाकृष्णन् ने देश की आवश्यकताओं के अनुरूप सर्वांगीण शिक्षा का समर्थन किया है। आधुनिक युग की आवश्यकताओं के अनुसार वे विज्ञान और शिल्प की शिक्षा को आवश्यक मानते हैं, दूसरी ओर वे साहित्यिक शिक्षा पर अधिक जोर देना भी अनुचित समझते हैं। शिक्षा के पाठ्यक्रम में दर्शनशास्त्र, अंकगणित, समाज-विज्ञान, समाज-विज्ञान, कृषि-विज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, साहित्य सभी को स्थान दिया जाना चाहिए, क्योंकि इनमें प्रत्येक विषय का अपना-अपना महत्व है, जब कि दर्शनशास्त्र जीवन के वास्तविक ध्येय को समझने में सहायक है, साहित्य आध्यात्मिक दृष्टि और मानव के बीच में सेतु है। अंकगणित की सभी प्रकार के अनुसंधान में आवश्यकता पडती है और कृषि-विज्ञान तथा औद्योगिक कलाएँ व्यावसायिक सफलता और भौतिक समृद्धि में सहायक है। सामाजिक विज्ञान मानव-विकास के लक्ष्य की ओर ले जाते है और अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र तथा धर्मशास्त्र व्यक्तिगत और सामाजिक नियम बनाने में सहायता देते हैं। प्राथमिक विद्यालयों में बुनियादी शिक्षा का पाठ्यक्रम अधिक उपयुक्त है। राधाकृष्णन् ने बुनियादी शिक्षा की प्रशंसा करते हुए लिखा है, "यह विद्यार्थी का दैनिक जीवन से सम्पर्क कराती है। यह शारीरिक शिक्षा का महत्व समझती है। शरीर, मानव-आत्मा की अभिव्यक्ति का साधन है, इसलिए भौतिक शिक्षा ठीक प्रकार से होनी चाहिए।" राधाकृष्णन् ने वैद्यकशास्त्र के शिक्षण पर भी जोर दिया है, क्योंकि यह मनुष्यों की सेवा करने का सबसे अच्छा साधन है। उन्होंने शिक्षा की विषय-वस्तु को अन्तःसम्बन्धि बनाने पर बल दिया। वे ज्ञान के विभिन्नीकरण के समर्थन में नहीं थे वरन् उसके एकीकृत या समग्र रूप के प्रतिपादक हैं। वें विषय-वस्तु के निर्धारण के लिए शिक्षक पर महत्वपूर्ण दायित्व डालते हैं तथा उनसे अपेक्षा करते हैं कि वे छात्रों के मानसिक रूझानों को आधार बनाकर विषयों का चयन करेंगे। वें विज्ञान तथा मानवशास्त्रों में उचित सन्तुलन स्थापित करने पर बल देते हैं। उन्होंने हृदय की संस्कृति तथा आध्यात्मिक विकास के लिए, साहित्य, प्राचीन ग्रन्थ, नीतिशास्त्र, दर्शन आदि के अध्ययन पर बल दिया। उन्होंने उच्च शिक्षा के स्तर पर सामान्य शिक्षा, उदार शिक्षा तथा शिक्षा व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया।

शिक्षण-प्रक्रिया वह है जिसमें भौतिक तथा आध्यात्मिक जगत के तत्व एक सीमा तक विद्यमान रहते हैं। इसमें भी परिवर्तनकारी तत्व निहित रहते हैं और इन तत्वों का एक सिलसिला होता है। डॉ.राधाकृष्णन् के अनुसार शिक्षण-प्रक्रिया एक ध्रुवीय नहीं है वरन् द्विमुखी तथा परस्पर क्रियात्मक (Interactional) प्रक्रिया है। डॉ. राधाकृष्णन् ने मानव प्रकृति के अनुसार छात्रों को तीन वर्गों में विभक्त किया-(अ) ज्ञान-प्रधान प्रकृति वाले (ब) भावना-प्रधान प्रकृति वाले (स) कर्म-प्रधान प्रकृति वाले।,

उपरोक्त आधार पर उन्होंने शिक्षण प्रक्रिया को तीन प्रकार की बताया:-

1. **ज्ञानात्मक**- इसके अंतर्गत श्रवण, मनन तथा निदिध्यासन को स्थान प्रदान किया।
2. **भावात्मक**- इसमें अनुभूति पर बल दिया जाता है।
3. **कार्य-प्रधान**- इसमें करके सीखने की विधि पर बल दिया जाता है।

डॉ. राधाकृष्णन् ने शिक्षण-प्रक्रिया के अंतर्गत ज्ञान-प्राप्ति के निम्नलिखित मार्गों पर बल दिया है।

(अ) प्रत्यक्ष विधि:- इसके द्वारा बालकों को शब्द, प्रत्यय, प्रतीक आदि का निर्माण करना सिखाया जा सकता है। सभी प्रकार के विज्ञानों का अध्ययन-अध्यापन प्रत्यक्ष विधि द्वारा किया जाना चाहिए।

(ब) अनुमान विधि:- उनका मत है कि विज्ञान, गणित तथा समाजशास्त्र के अध्ययन में अनुमान विधि का प्रयोग करना उचित है।

(स) शब्द विधि:- डॉ. राधाकृष्णन् का मत है कि स्थायी ज्ञान शब्द विधि द्वारा देना ही उचित है क्योंकि 'शब्द' एक स्वतन्त्र स्लोत है।

डॉ. राधाकृष्णन् ने शिक्षण-प्रक्रिया में वाचन, चिन्तन, मनन, व्याख्यान विधि तथा ट्यूटोरियल शिक्षण को भी स्थान प्रदान किया।

समकालीन प्रासंगिकता:-

डॉ. राधाकृष्णन के शैक्षिक दृष्टिकोण आज भी पूरी तरह से प्रासंगिक हैं, विशेष रूप से नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की दिशा में। इस नीति में शिक्षा को केवल जानकारी तक सीमित न रखकर, नैतिक मूल्यों, चरित्र निर्माण और व्यक्तित्व विकास का माध्यम माना गया है। डॉ. राधाकृष्णन भी शिक्षा को आत्मिक उन्नति और संपूर्ण मानव निर्माण का उपकरण मानते थे। नई नीति में यह प्रयास है कि विद्यार्थी सोचने, समझने, और समाज के प्रति उत्तरदायी बनने के योग्य बनें – जो उनके विचारों के अनुरूप है। इसके अतिरिक्त, नीति में शिक्षक को केवल ज्ञानदाता नहीं, बल्कि एक प्रेरक और मार्गदर्शक की भूमिका में देखा गया है, जो उनके 'आदर्श गुरु' की अवधारणा से मेल खाता है। बहुभाषिकता, लचीलापन, और व्यावहारिक ज्ञान जैसे बिंदु भी उनके समन्वयवादी शिक्षा-दर्शन की पुष्टि करते हैं। इसलिए, उनके विचार आज भी शिक्षा को मानवीय और उद्देश्यपरक बनाने में सहायक हैं।

निष्कर्ष:-

शिक्षा का लक्ष्य नर-नारियों को विश्व के योग्य नागरिक बनाना है। शिक्षा से उनमें ऐसा चिन्तन, ध्यान, अन्तदृष्टि और आध्यात्मिकता विकसित होनी चाहिए, जिससे वे विश्व-राज्य के अच्छे नागरिक बन सकें। जब इस आदर्श का सभी देशों में पालन किया जाएगा तभी इस भूमण्डल पर शान्ति और ईश्वर के राज्य की स्थापना हो सकती है। आधुनिक युग में भारतवर्ष के प्रतिनिधि दार्शनिक होने की है हैसियत से राधाकृष्णन् ने शिक्षा के क्षेत्र में यही सन्देश दिया है। उनके शिक्षा-दर्शन में समकालीन भारतीय दर्शन के नव्यवेदान्त विचारधारा की पूर्ण अभिव्यक्ति मिलती है। उनके शिक्षा-दर्शन में संसार के सभी आधुनिक शिक्षाशास्त्रियों की विशेषताएँ; जैसे-सर्वांगीण दृष्टिकोण, समन्वय, चरित्र की शिक्षा पर जोर, जनतन्त्र के लिए शिक्षा, मानवतावाद और सबसे अधिक अन्तर्राष्ट्रीयतावाद मिलते है। इसलिए उनको आधुनिक युग में मानव-चेतना का प्रतिनिधि शिक्षा-दार्शनिक कहा जा सकता है। जिस समय राधाकृष्णन् ने अपने शिक्षा सम्बन्धी विचार उपस्थित किए, उस समय देश अंग्रेजों के अधीन था तथा तत्कालीन शिक्षा-प्रणाली किसी भी प्रकार से राष्ट्र के हितों के अनुकूल नहीं थी। इन विचारों ने तत्कालीन शिक्षा-प्रणाली की घोर आलोचना की और ऐसी शिक्षा-व्यवस्था प्रस्तुत की जिससे राष्ट्रीय हितों का साधन हो सके, किन्तु राष्ट्रीय हितों का साधन करते हुए इन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यों की अवहेलना नहीं की, यह समकालीन भारतीय राष्ट्रवादी विचारधारा की सबसे बडी विशेषता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. त्यागी गुरसरनदास, एवं सिंह सुनीता (2012-13), शैक्षिक विचार एवं व्यवहार, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. त्यागी गुरसरनदास, (2016), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
3. शर्मा रामनाथ (2012/2013): भारतीय शिक्षा दर्शन, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा।
4. रूहेला. एस. पी, (2012), विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा।

भारतीय शिक्षाशास्त्र के शिल्पकार

संपादकगण

डॉ. राहुल कुमार वर्तमान में स्वामी शुकदेवानंद महाविद्यालय, शाहजहाँपुर,उत्तर प्रदेश के शिक्षक शिक्षा विभाग में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यरत हैं। आपने शिक्षा में स्नातकोत्तर (एम.एड.) के साथ-साथ अंग्रेजी, समाजशास्त्र एवं शिक्षा में भी परास्नातक की उपाधियाँ प्राप्त की हैं। आपने पीएच.डी.(शिक्षा) की उपाधि प्राप्त की है। आपने शिक्षा विषय में यूजीसी-नेट परीक्षा सफलतापूर्वक उत्तीर्ण की है। एम. एड. कक्षाओं में 10 वर्षो से अधिक के अध्यापन एवं शोध अनुभव के साथ, डॉ. कुमार ने शैक्षणिक जगत में सक्रिय योगदान दिया है। आपने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में 15 शोध पत्र प्रस्तुत किए है। इसके अतिरिक्त, आपने प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में 10 से अधिक शोध पत्र प्रकाशित किए है तथा संपादित पुस्तकों में 8 अध्यायों का योगदान दिया है। संपादक के रूप में, आपने 10 शैक्षणिक पुस्तकों का संपादन सफलतापूर्वक किया है। आपका एक पेटेंट भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा प्रकाशित आधिकारिक जर्नल में प्रकाशित है। पर्यावरण जागरूकता एवं शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु आपको प्रतिष्ठित ''पर्यायवरण रत्न पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया है। आपकी शैक्षणिक रुचियाँ, शिक्षा के सामजिक परिपेक्ष्य,शैक्षिक प्रौद्योगिकी, एवं शोध पद्धति जैसे विविध क्षेत्रों में केंद्रित हैं।

डॉ.नीता वर्मा ने एम.ए.(शिक्षा, अंग्रेजी, संस्कृत एवं वैकल्पिक उपचार), एम.एड., यूजीसी.नेट (शिक्षा) की उपाधियाँ प्राप्त की है। आपने पर्यायवरण विज्ञान में स्नातक की परीक्षा भी उर्त्तीण की है। आप प्रतिष्ठित फुलब्राइट टीचिंग एक्सीलेंस एंड अचीवमेंट स्कॉलरशिप से सम्मानित से हो चुकी हैं, जो संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा प्रदान की जाती है। इसके अतिरिक्त आप **Appalachian State University, North Carolina, USA** की **ALUMNI** है तथा आपने **National Institute of Education, Singapore** से भी शैक्षिक प्रशिक्षण प्राप्त किया है। डॉ. नीता वर्मा वर्तमान में शिक्षा विभाग, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.),दिल्ली में सहायक प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। आपके पास 28 वर्षो का अनुभव है। आपके 9 शोध पत्र, दो पुस्तकें और दो पुस्तकों में अध्याय प्रकाशित हुये हैं। आपने देश और विदेश के शिक्षकों, प्रधानाचार्यों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं कहि शिक्षकों (विशेष रूप से नाइजीरिया और बांग्लादेश) के लिए 50 से अधिक कार्यशालाओं सत्रों और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक संचालन किया है।

डॉ. दीपेश लाल, एल.सी.आई.टी स्कूल ऑफ फार्मेसी, बिलासपुर (छतीसगढ़) में एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत है। आपका विशेषज्ञता क्षेत्र फार्मास्युटिक्स है। आपने अब तक 15 से अधिक स्नातक शोधार्थियों तथा 4 से अधिक स्नातकोत्तर शोधार्थियों का मार्गदर्शन किया है। आपके नाम से राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय जर्नलों में 20 से अधिक शोध-पत्र प्रकाशित हो चुके है। आपने चिकित्सा तथा प्रायोगिक विषयों पर विभिन्न क्षेत्रों में 8 से अधिक पुस्तकों का लेखन किया हैं। इसके अतिरिक्त, आपने 20 से अधिक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों, सेमिनारों तथा वेबिनारों में सक्रिय सहभागिता निभाई है। आपके सतत शोध कार्य, शैक्षणिक योगदान और विद्यार्थियों के मार्गदर्शन ने आपको फार्मास्युटिकल विज्ञान के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित स्थान प्रदान किया है।

श्री राजेश कुमार, झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय, रांची के मानवशास्त्र और जनजातीय अध्ययन विभाग में पीएच.डी. शोधार्थी हैं। तथा जनजातीय शिक्षा, पोषण सुरक्षा एवं कल्याणकारी योजनाओं पर शोध कर रहे है। श्री राजेश ने सामाजिक कार्य विषय से यू जी सी के द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा को 02 बार पास किया है, आप[illegible] भोजन योजना, जनजातीय छात्रों और शिक्षा पर केन्द्रित 09 से अधिक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्र प्रस्तुत किए है त[illegible] शोध पत्र प्रकाशित किये है। सामाजिक न्याय जाति-जनजातीय असमानता और शिक्षा जैसे विषयों में विशेष रुचि रखते हुए आपने पुस्तकों में अध्याय के रूप में भी सहलेखन एवं संपादन कार्य किया हैं। शैक्षणिक क्षेत्र में आपके सक्रिय योगदान के साथ-साथ विभिन्न संगोष्ठियों और कार्यशालाओं में भागीदारी ने आपको एक प्रतिबद्ध शोधकर्ता और संपादक के रूप में स्थापित किया है।

श्री अभिषेक दीक्षित एक समर्पित एवं शोध-उन्मुख शिक्षाविद् हैं, जिनकी शैक्षणिक नीव विज्ञान और शिक्षा-दोनों ही क्षेत्रों में सुदृढ़ है। आपने रसायन विज्ञान में स्नातकोत्तर(एम.एस.सी.)तथा शिक्षा में स्नातकोत्तर(एम.एड.) की उपाधि अर्जित की है। आपने शिक्षा विषय में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा आयोजित प्रतिष्ठित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा(NET) सफलतापूर्वक उत्तीर्ण की है। श्री दीक्षित ने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर 10 से अधिक शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं तथा प्रतिष्ठित शोध पत्रिकाओं में 8 शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। आपने संपादित पुस्तकों में 4 अध्यायों का योगदान दिया है। आपका एक पेटेंट भारतीय पेटेंट कार्यालय द्वारा प्रकाशित आधिकारिक जर्नल में प्रकाशित है। आपने शोध पद्धति, माइक्रो-टीचिंग, शिक्षण कौशल विकास, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, मूल्यांकन तकनीक एवं नवाचारपूर्ण शिक्षण विधियों पर केंद्रित 15 राष्ट्रीय एवं राज्यस्तरीय कार्यशालाओं में सक्रिय सहभागिता की है। आपकी शैक्षणिक रुचि मुख्यतः भौतिक विज्ञान की शिक्षण पद्धति, शैक्षिक प्रौद्योगिकी तथा शोध पद्धति विविध एवं समकालीन क्षेत्रों में केंद्रित हैं।

Available on

ग्रन्थ पब्लिकेशन्स
कानपुर नगर-21
www.granthpublications.in

ISBN 978-81-980702-3-4